Dainik Bhaskar Date: 26.09.2018

डीआरडीओ के पूर्व प्रमुख डॉ. अत्रे 27 को इंदौर में

इंदौर | डिफेंस रिसर्च एंड डेवलपमेंट ऑर्गनाइजेशन (डीआरडीओ) के पूर्व प्रमुख और ख्यात डिफेंस साइंटिस्ट पद्म विभूषण डॉ. वासुदेव के. अत्रे गुरुवार को इंदौर आएंगे। वे वैष्णव विद्यापीठ विश्वविद्यालय में होने वाले आर्यभट्ट मेमोरियल ओरेशन लेक्चर में स्टूडेंट्स को संबोधित करेंगे। उनके

वैष्णव विद्यापीठ विश्वविद्यालय में गुरुवार को होगा लेक्चर

लेक्चर का टॉपिक होगा साइंस एंड टेक्नालॉजीः एन इंडियन सिनेरियो। साइंस और इंजीनियरिंग में उनके योगदान, देश में ही बने लाइट कॉम्बेट एयरक्राफ्ट का पहला प्रोटोटाइप डॉ. अत्रे के कार्यकाल में ही तैयार किया गया था। नौ सेना के लिए अंडरवॉटर सोनार टेक्नोलॉजी और

लेक्चर में स्टूडेंट्स को संबोधित करेंगे। उनके

वैष्णव विद्यापीठ विश्वविद्यालय में गुरुवार को होगा लेक्चर

लेक्चर का टॉपिक होगा साइंस एंड टेक्नालॉजीः एन इंडियन सिनेरियो। साइंस और इंजीनियरिंग में उनके योगदान, देश में ही बने लाइट कॉम्बेट एयरक्राफ्ट का पहला प्रोटोटाइप डॉ. अत्रे के कार्यकाल में ही तैयार किया गया था। नौ सेना के लिए अंडरवॉटर सोनार टेक्नोलॉजी और पहले नेवल अकाउस्टिक रिसर्च शिप प्रोजेक्ट के प्रमुख भी डॉ. अत्रे ही थे। साइंस और इंजीनियरिंग में उनके योगदान के लिए डॉ. अत्रे को पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया था। गुरुवार सुबह 11.30 बजे वैष्णव यूनिवर्सिटी में होने वाले लेक्चर में शहर के वैज्ञानिक भी शामिल हो सकते हैं।

पत्रिका

इंदौर, गुरुवार, 27.09.2018

डिफेंस साइंटिस्ट डॉ. वासुदेव अत्रे का व्याख्यान आज

इंदौर ◆ देश के ख्यात डिफेंस साइंटिस्ट पद्मभूषण डॉ. वासुदेव अत्रे का व्याख्यान 27 सिंतबर को श्री वैष्णव विद्यापीठ में सुबह 11.00 बजे होगा। उनके व्याख्यान का विषय है 'आज का विज्ञान और तकनीक भारत के परिप्रेक्ष्य में'। डॉ. अत्रे सन् 2000 में डीआरडीओ के महानिदेशक थे। उनसे पहले इस पद पर डॉ. एपीजे कलाम थे।

city भास्कर
INDORE FRIDAY, 28/09/2018

कब तक भारत यंग नेशन रहेगा? जब यहां बुज़ुर्ग ज्यादा होंगे तब हम आने वाली पीढ़ी पर निर्भर होंगे

सिटी रिपोर्टर | इंदौर

भारतीय रक्षा वैज्ञानिक और डीआरडीओ के पूर्व महानिदेशक पद्म विभूषण डॉ. वासुदेव अत्रे का मानना है कि विश्व शक्ति बनने से पहले देश का आर्थिक रूप से मजबूत होना जरूरी है। आज हर देश विश्व शक्ति बनना चाहता है, इसमें भारत भी शामिल है। इसलिए साइंस एंड टेक्नोलॉजी की जरूरत है। लेकिन उससे पहले नॉलेज होना जरूरी है और नॉलेज के लिए साइंस और टेक्नोलॉजी का होना बहुत जरूरी है। दुनिया के सभी विकसित देश साइंस-टेक्नोलॉजी की मदद से ही मजबूत हुए हैं। इसलिए हमें इंडियन यंग माइंड को प्रमोट करना होगा।

आर्यभट्ट मेमोरियल ओरेशन के तीसरे आयोजन में गुरुवार को डॉ. वासुदेव अत्रे शामिल हुए। श्री वैष्णव विद्यापीठ विश्वविद्यालय में हुए इस कार्यक्रम में उन्होंने साइंस एंड टेक्नोलॉजी इन इंडियन सिनेरियो विषय पर बात की। भारत में विज्ञान और तकनीक के विकास के साथ ही उन्होंने कुछ कमियों को भी उजागर किया। कहा - सिलिकॉन वैली में जितनी भी बड़ी मल्टीनेशनल कंपनियां हैं वहां 50 प्रतिशत से ज्यादा भारतीय काम कर रहे हैं। जब भी साइंस और तकनीक की बात आती है तब भारत का नाम जरूर आता है। पूरी दुनिया में भारतीय

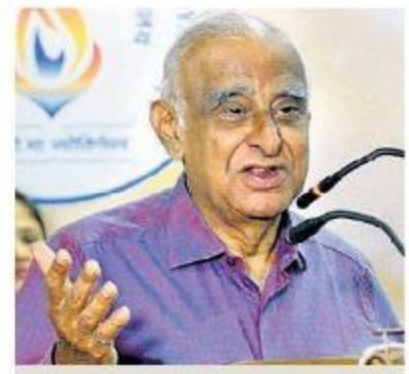

देश में साइंस एंड टेक्नोलॉजी मंत्री उसे बनाया जाता है, जिसे उसके बारे में कोई जानकारी नहीं। कर्नाटक में जब एजुकेशन मिनिस्टर की शिक्षा नीतियों पर सवाल हुए तो मामला सीएम तक पहुंचा। सीएम ने कहा मैं खुद अशिक्षित हूं, लेकिन सीएम तो हूं। ये हमारे नेताओं का एटिट्यूड है।

मूल्यों का हमेशा से सम्मान रहा है। हम 3 बिलियन खर्च कर रहे हैं चंद्रयान पर। हम मल्टीपल सैटेलाइट सिस्टम तैयार कर रहे हैं, जीपीएस तैयार कर रहे हैं। सुरक्षा की दृष्टि से कोई समस्या नहीं है हमारे यहां। इसलिए जब भी हम उपकरण बनाते हैं वो सबसे ज्यादा फाइनेस्ट होते हैं। भले ही वो सोलर हो न्यूक्लियर हो एयरक्राफ्ट हो। 70 साल में इतने सारे अचीवमेंट हासिल करने के बावजूद कई कमियां हैं।

कमी ये कि हम एडॉप्टर हैं, हम क्रिएटर नहीं है। हम औरों की चीजें अपना तो रहे हैं, लेकिन नवसृजन नहीं कर रहे। हम सिर्फ टेकनीक को रिसीव कर रहे हैं। आईआईटी मुंबई को पीछे छोड़ इंदौर आईआईटी ने देश के सर्वोच्चा संस्थानों में सेकंड पोजीशन हासिल कर ली है। हमारे यहां आईआईटी है, रिसर्च पेपर भी तैयार कर रहे हैं, लेकिन प्रयोग नहीं हो रहे। डिज़ाइन सिर्फ कागज़ पर हो रहे हैं। अमेरिकन यूनिवर्सिटीज में एडवांस रिसर्च कर रहे हैं। हमें हर दिन दुनिया की दूसरी यूनिवर्सिटीज़ की नई रिसर्च पढ़ने को मिलती है। लेकिन भारत की नहीं पढ़ने मिलती। यदि हम कोई भी इलेक्ट्रानिक गैजेट्स पर निर्भर है हमारा अपना कोई सामान नहीं है।

गांव में भी रिसर्च हो रही है। पिछले कुछ सालों में देखा है। गांव की रिसर्च सामने आ रही है। अभी हम यंग है, इसलिए अभी अच्छा काम करना होगा, बाद में हमारे पास समय नहीं होगा। हम सिर्फ तकनीक की सोच रहे हैं, लेकिन आम आदमी के जीवन पर असर करनेवाला इन्फ्रास्ट्रक्चर भी जरूरी है।

आने वाले 20 साल बहुत महत्वपूर्ण हैं। हम बूढ़े हो जाएंगे। यंग नेशन नहीं रहेगा भारत। सब कुछ आने वाली पीढ़ी पर निर्भर होगा। यूनिवर्सिटी को रिसर्च के लिए 200-300 करोड़ रिसर्च में लगाना चाहिए। शिक्षा का बजट बहुत कम है। शिक्षा पर काम करें, रिसर्च में बजट बढ़ाएं। हमारे पास अभी भी कोई अच्छा विजन नहीं है।